Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका (1885-1947)

Manoj Kumar
Associate Professor (History)
Govt.Degree College-
Rewalsar, Distt.-Mandi, Himachal.Pradesh, India

सारांश

महिलाओं के योगदान का वर्णन किए बिना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा हैं। भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को अग्रणी स्थान प्राप्त हैं । वे सच्ची भावना और निर्भय साहस के साथ स्वतंत्रता संग्राम में लड़ी और स्वतंत्रता अर्जित करने के लिए विभिन्न यातनाओं, शोषण और कठिनाइयों का सामना किया । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास नारी के त्याग, निस्वार्थता, शौर्य की गाथाओं से भरा पड़ा है। भारतीय महिलाओं ने कई तरह की सामाजिक बाधाओं से मुक्त होकर घर से जुड़ी पारंपरिक भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से खुद को दूर कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। हालाँकि, पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए योद्धा के रूप में लड़ना आसान नहीं था,फिर भी महिलाओं ने ऐसे रूढ़िवादी लोगों की धारणा को बदलने की कोशिश की जो सोचते थे कि महिलाएं केवल घर के काम करने के लिए होती हैं। इसके अलावा, महिलाओं ने न केवल अपने जीवन का त्याग तक किया बल्कि ऐसे मुद्दों का मुकाबला भी किया । क्रांतियों के संघर्ष, रक्तपात, सत्याग्रह और बलिदानों की एक शताब्दी के बाद, भारत ने आखिरकार 15 अगस्त, 1947 को महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भावी पीढ़ियों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के प्रयासों की भूमिका तथा स्वतंत्रता की लड़ाई में महिलाओं द्वारा किए गए अपरिहार्य योगदान पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: ब्रिटिश शासन, महिला, स्वतंत्रता आंदोलन, भूमिका,संघर्ष।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता-पूर्व काल में देश में महिलाओं की स्थिति वंचित अवस्था में थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि यहाँ पुरुष प्रधानता का प्रचलन था। उन्नीसवीं सदी के मध्य में, उदारवादी सुधारकों ने महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन का लाभार्थी बनाया। ब्रह्म समाज और आर्य समाज ने विशेष रूप से महिलाओं को जागृत करने में महत्वपूर्ण कार्य किया और उन्हें खुले काम में अपनी भागीदारी निभाने के लिए प्रोत्साहित किया । राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का प्रारंभिक योगदान 19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में स्थापना के साथ शुरू हुआ। कांग्रेस की स्थापना के बाद से ही वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलायें प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने लगी। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश की शुरूआत थी।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रवादी आंदोलन अहिंसा पर आधारित था। इस विचारधारा ने महिलाओं को अपने घर की दहलीज के बाहर कदम रखने के लिए निर्देशित किया। 20वीं शताब्दी में भारत में अंग्रेजों से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष को देश का सबसे महत्वपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम के रूप में चिह्नित किया गया है।जिसमें कई महिला स्वतंत्रता सेनानियों का भी इस संघर्ष में अतुलनीय योगदान रहा।भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के शुरुआती दौर में कई महिलाएं अग्रणी के रूप में उभरीं। जिसमें सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, विजय लक्ष्मी पंडित, एनी बेसेंट,भीकाजी कामा आदि ऐसे नाम हैं जिन्हें आज भी उनके विलक्षण योगदान के लिए याद किया जाता है। भारत की कोकिला के रूप में जानी जाने वाली सरोजिनी नायडू ने एक कवि, वक्ता और राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने निडर होकर बड़ी सभाओं को संबोधित किया तथा लोगों को स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। एक अन्य उल्लेखनीय महिला एनी बेसेंट रही, जो एक आयरिश मूल की ब्रिटिश नागरिक होते हुए जिन्होंने भारत में होम रूल और स्व-शासन की वकालत की। बेसेंट ने महिलाओं को लामबंद करने और देश भर में राष्ट्रवादी भावनाओं को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अध्ययन विधि

शोध पत्र मूल रूप से द्वितीयक डेटा स्रोतों पर आधारित हैं । विभिन्न संबंधित विषयों की जानकारी पुस्तकों, समाचार पत्रों, लेखों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और इंटरनेट के माध्यम से एकत्र की गई है।

बीसवीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति

बीसवीं शताब्दी तक अंग्रेज भारत के शासक बने रहे। ब्रिटिश शासन की अवधि में हमारे समाज की सामाजिक व आर्थिक संरचनाओं में अनेक परिवर्तन किए गए। ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों की अवधि में स्त्रियों के जीवन में अदृश्य सुधार हुए। स्त्रियों को शिक्षा दिये जाने का विचार ब्रिटिश शासन काल में उदय हुआ। इससे पूर्व यह एक सार्वभौमिक मान्यता थी कि स्त्रियों को शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन्हें आजीविका का अर्जन नहीं करना है। ईसाई मिशनरियों ने स्त्रियों की शिक्षा में रुचि लेना प्रारम्भ किया। 1824 में सबसे पहली बार लड़कियों का स्कूल बम्बई में प्रारम्भ हुआ।1854 में वुडस डिस्पैच आने पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने शिक्षा विकास कार्यक्रम को मान्यता प्रदान की। इसमें विशेष रुप से महिलाओं की नौकरी तथा शिक्षा का उल्लेख किया तथा लड़कियों के लिए विद्यालय खोले। 1882 से नारी शिक्षा के आँकड़े व्यवस्थित रुप से एकत्रित किए जाने लगे । 1881-1902 के बीच महिलाओं का कॉलेज में प्रवेश शुरु हुआ। इस काल में माध्यमिक शिक्षा तक पढ़ाई पर जोर दिया गया,साथ ही समाज सुधारकों के योगदान के कारण लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा मिला जिससे प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश 1.24 लाख से बढ़कर 3.45 लाख तक हो गया। अगले दो दशकों में महिला शिक्षा में सक्रियता बढ़ी । जिसके लिए स्वतन्त्रता आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका तथा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में महिलाओं की सक्रिय

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

भागीदारी एंव लार्ड कर्जन द्वारा महिला शिक्षा का समर्थन करना था। सन् 1937 के चुनाव तक पति की शिक्षा और सम्पत्ति के आधार पर बहुत थोड़ी सी महिलाओं को मताधिकार प्रदान किया।

गांधीवादी नेतृत्व में महिलाएं:

गांधीजी के आगमन के साथ ही स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का आगमन तेज हुआ। गांधी का विचार था कि चूंकि महिलाएं लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं इसलिए महिलाओं की प्रमुख भागीदारी की पेशकश की जानी चाहिए। असहयोग आंदोलन की शुरुआत के साथ उन्होंने महिलाओं को घरेलू मामलों से बाहर आने की आवश्यकता पर बल दिया। गांधी ने महिलाओं को अपने निर्णय लेने की क्षमता दी और उन्हें जाति, भेदभाव और बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई के साथ-साथ महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया था।

असहयोग आंदोलन (1920) अभूतपूर्व महिला सक्रियता का गवाह है,जिसमें विशेष रूप से शिक्षित और मध्यम वर्ग की महिलाओं का योगदान रहा। गांधीजी के असहयोग आंदोलन में स्वदेशी कपड़े को पूर्ण रूप से अपनाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के अलावा सरकारी कार्यालयों और संस्थानों, अदालतों, विधायिकाओं आदि का बहिष्कार शामिल था। लोगों ने कानून का उल्लंघन किया और लगभग तीस हजार पुरुषों और महिलाओं ने गिरफ्तारी दी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन(1930) के दौरान गांधीवादी आदर्शों से प्रेरित सरोजिनी नायडू ने गांधी की गिरफ्तारी के बाद भी नमक कानून, करों के खिलाफ धरना तथा नमक कार्य में शांतिपूर्ण विरोध का नेतृत्व किया। उन्होंने मतदान के अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी और उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्षा (1925) के रूप में चुना गया।सविनय अवज्ञा आंदोलन में कमलादेवी चधोपाध्याय और अवंतिका गोखले के नेतृत्व में बंबई में रहने वाली हजारों गुजराती महिलाओं ने 6अप्रैल,1930 में नमक कानून का उल्लंघन किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान कलकत्ता में लेडीड पिकेटिंग बोर्ड, नारी सत्याग्रह समिति जैसे महिला संगठनों की एक श्रृंखला बनाई गई।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में महात्मा गांधी के 'करो या मरो' के आह्वान से महिलाओं में एक नया जोश भर गया। एक शक्ति के रूप में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसने आंदोलन की दिशा बदल दी। महिलाओं द्वारा निभाई गई भक्ति, बलिदान और देशभक्ति की भूमिका ने स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में सबसे उल्लेखनीय योगदान के रूप में चिह्नित किया । भारत छोड़ो आंदोलन में उषा मेहता, अरुणा आसफ अली के नेतृत्व में भूमिगत सक्रियता आंदोलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण रही,भले ही भारत छोड़ो आंदोलन दूसरे विश्व युद्ध का उत्पाद था और सत्ता द्वारा बहुत क्रूरता से दबा दिया गया, लेकिन इसमें महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय थी। महात्मा गांधी ने एक नई सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के संघर्ष में महिलाओं को एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में देखा और राष्ट्रवादी खोज में स्त्री आदर्श को महत्वपूर्ण महत्व दिया। उन्होंने महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में निर्णायक भूमिका

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

का मार्ग प्रशस्त किया। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका पर टिप्पणी करते हुए, महात्मा गांधी ने कहा था, "जब भारत की आजादी की लड़ाई का इतिहास लिखा जाएगा, तो भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान को अग्रणी स्थान मिलेगा।"

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की महिला नेता

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।सभी महिला स्वतंत्रता सेनानियों को सूचीबद्ध करना बहुत कठिन कार्य है और उनमें से कुछ को अलग करना उससे भी कठिन। इतिहास ने असाधारण बहादुरी और बुद्धिमत्ता वाली कई महिलाओं को देखा है जो अपने समय के पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती रही।आज वे केवल महिलाओं के लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।आन्दोलन में योगदान देने वाली कुछ महिलाएं निम्नलिखित है-

सरोजिनी नायडू: (13 फरवरी, 1879 - 2 मार्च, 1949)

"I am not ready to die because it requires infinitely higher courage to live" - Sarojini Naidu

भारत की कोकिला के रूप में जानी जाने वाली सरोजिनी नायडू, देश की प्रतिष्ठित कवयित्री,अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों में से थी। उनके पिता निजाम कॉलेज में प्रिंसिपल थे। उस समय निजाम महिला शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, इसलिए सरोजिनी को स्कूली शिक्षा के लिए मद्रास भेजा गया। उनका राजनीतिक जीवन 1905 में शुरू हुआ जब वह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनीं। 1905 में बंगाल के विभाजन के विरोध के दौरान वह राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हुईं।1915-18 में उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों, स्थानों की यात्रा की और सामाजिक कल्याण, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रवाद पर व्याख्यान दिया। 1917 में उन्होंने महिला भारतीय संघ की स्थापना की। 1925 में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में अध्यक्ष बनीं। उन्होंने 1930 में नमक सत्याग्रह में भाग लिया और दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने पूर्वी अफ्रीकी भारतीय कांग्रेस की अध्यक्षता भी की। उन्होंने भारत छोड़ो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवधि के दौरान ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल में डाल दिया। 1905 में उनका पहला कविता संग्रह 'द गोल्डन थ्रेशोल्ड' नाम से प्रकाशित हुआ। इसके अलावा 1961 में सरोजिनी नायडू की बेटी पद्मजा नायडू ने 'द फेदर ऑफ द डॉन' नाम से अपना दूसरा कविता संग्रह प्रकाशित किया जो 1927 में लिखा गया था।

भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रयास करने के अलावा, दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका में भारतीय अनुबंधित श्रमिकों की समस्या के खिलाफ भी इनका अथक संघर्ष रहा।सरोजिनी नायडू दक्षिण अफ्रीका के अपने दौरे के दौरान भारत के एक महान शांतिदूत के रूप में जानी जाने लगीं। उन्होंने डरबन के टाउन हॉल में मार्च 1924 को भाषण दिया। हॉल यूरोपीन तथा भारतीयों से खचाखच भरा हुआ था। बैठक की अध्यक्षता श्री नॉर्मन ने की और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की आगंतुक सरोजिनी नायडू का परिचय वहां एकत्रित दर्शकों से

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

कराया। सरोजिनी नायडू ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि सारी मानवता ,पंथ, नस्ल , रंग पर निर्भर सभी एक ईश्वर-सर्वशक्तिमान के प्राणी हैं।

विजयलक्ष्मी पंडित (18 अगस्त, 1900 - 1 दिसंबर, 1990)

विजय लक्ष्मी पंडित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1919) के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू की बेटी और भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की बहन थी। 1921 में, उनका विवाह रंजीत सीताराम पंडित (1893-1944) से हुआ जो काठियावाड़ गुजरात के एक सफल बैरिस्टर और शास्त्रीय विद्वान थे, जिन्होंने कल्हण के महाकाव्य इतिहास राजतरंगिणी का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद किया था। श्रीमती पंडित झांसी की रानी लक्ष्मी बाई और सरोजिनी नायडू से प्रभावित थीं। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने के लिए असहयोग आंदोलन में प्रवेश किया। उसने कई सार्वजनिक व्याख्यानों में भाग लिया और उसमें भारत का प्रतिनिधित्व करने के ब्रिटिश-प्रभुत्व वाले प्रतिनिधि के अधिकारों को चुनौती दी। श्रीमती पंडित को 1932, 1940 और 1942 में तीन बार उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए जेल में डाल दिया गया था। नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने जुलूसों का नेतृत्व किया और शराब और विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया। उन्होंने भारत में महिलाओं के लिए कई बाधाओं को तोड़ा है।

श्रीमती पंडित स्वतंत्रता पूर्व भारत में कैबिनेट पद संभालने वाली पहली भारतीय महिला भी रही। 1937 में वह संयुक्त प्रांत की प्रांतीय विधायिका के लिए चुनी गईं और उन्हें स्थानीय स्वशासन और सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्री नामित किया गया। वह 1938 तक और फिर 1946 से 1947 तक बाद के पद पर रहीं। 1946 में वह संयुक्त प्रांत से संविधान सभा के लिए चुनी गईं। वह कैबिनेट मंत्री बनने वाली पहली महिला थीं, उन्हें स्थानीय स्वशासन और सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्री के पद के लिए नामित किया गया था। 1953 में वह संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष भी रही। वह दुनिया की पहली महिला राजदूत भी थीं जिन्होंने तीन देशों - मास्को (1947-49), वाशिंगटन (1949-51)और लंदन में (1955 से 1961) तक यह पद प्राप्त किया।

एनी बेसेंट (1 अक्टूबर, 1847 – 20 सितंबर, 1933)

एनी बेसेंट एक आयरिश मूल की ब्रिटिश नागरिक होते हुए जिन्होंने भारत में होम रूल और स्व-शासन की वकालत की। बेसेंट ने महिलाओं को लामबंद करने और देश भर में राष्ट्रवादी भावनाओं को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बेसेंट ने पहली बार 1893 में भारत का दौरा किया और बाद में भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल होकर यहां बस गईं। एनी बेसेंट स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष की कट्टर समर्थक थीं। जब 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया तो उन्होंने भारत में लोकतंत्र और ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर प्रभुत्व की स्थिति के लिए होम रूल लीग शुरू करने में मदद की। उन्होंने 1916 में मद्रास में होम रूल लीग तथा थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ इंडिया की भी स्थापना की। होम रूल के विचार को भारत के बड़े हिस्से में लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने जोश और ऊर्जा के साथ काम किया। उन्होंने बाहरी दुनिया में भारतीय प्रश्न के बारे में अनुकूल राय बनाने के लिए पर्याप्त काम किया ।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

वह 1917 में कलकत्ता अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष रहीं। उन्होंने 'न्यू इंडिया' और 'कॉमनवेल्थ' का संपादन भी किया। एनी बेसेंट भारतीय राजनीति में एक गतिशील शक्ति थीं और उन्होंने राजनीतिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टिकोणों से भारत में राष्ट्रीय उत्थान के लिए बहुमूल्य सेवा प्रदान की।स्वतंत्रता संग्राम, शैक्षिक उन्नति और सामाजिक सुधारों के लिए एनी बेसेंट के अतुलनीय कार्य को भारत आज भी कृतज्ञता के साथ याद करता है।

अरुणा आसफ अली (16 जुलाई, 1909 – 26 जुलाई, 1996)

आसफ अली से शादी करने के बाद अरुणा आसफ अली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य बनीं। उन्होंने नमक सत्याग्रह (1931) के दौरान सार्वजनिक जुलूसों में भाग लिया तथा इस आरोप में उन्हे गिरफ्तार किया गया । 1931 में जब गांधी-इरविन समझौते के तहत भी उन्हे रिहा नहीं किया गया, जिसमें सभी राजनीतिक कैदियों की रिहाई की शर्त थी। तो अन्य महिला सह-कैदियों ने भी परिसर छोड़ने से इनकार कर दिया तब भी उन्हें रिहा नहीं किया गया और महात्मा गांधी के हस्तक्षेप के बाद उनकी रिहाई सुनिश्चित हुई।

9 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए ऐतिहासिक भारत छोड़ो आंदोलन में एक कट्टरपंथी राष्ट्रवादी अरूणा आसफ अली ने एक उत्कृष्ट भूमिका निभाई । उनके योगदान की चर्चा के बगैर भारत छोड़ो आंदोलन का उल्लेख अधूरा है। इन्हें 'ग्रैंड ओल्ड लेडी' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में गांधी जी ने लोगों को "करो या मरो" का संदेश दिया जिससे उनमें कान्ति की भावना उत्पन्न हो गई और हिंसात्मक गतिविधियों बढ़ने लगी। रेल पटरियां उखाड़ना, पोस्ट ऑफिस तथा सरकारी कार्यालयो में आग लगाना और ऐसे कार्य करना जिससे ब्रिटिश प्रशासन पंगु हो जाये। जिस समय मुंबई में शीर्ष कांग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी हुई, कुछ महिला कांग्रेसियों ने सफलता पूर्वक गिरफ्तारी से बचकर भूमिगत कांग्रेस के गठन का निश्चय किया। उनमें सुचेता कृपलानी, अरूणा आसफ अली तथा साराभाई प्रमुख थी। पुलिस से बचने के लिए उन्हे कांग्रेस का कार्यालय बार-बार बदलना पड़ता था। इस भूमिगत आंदोलन में सुचेता कृपलानी और अरूणा आसफ अली जैसी महिलाओं का सक्रिय योगदान था। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध देश की जनता को जागृत करने के उद्देश्य से उन्होंने विभिन्न स्थानों की गुप्त यात्राएं की और आन्दोलनकारियों से संपर्क कर उन्हें आंदोलन से संबंधित निर्देश देती रही।अरूणा आसफ अली जैसी महिलाओं के साहस और योग्य नेतृत्व के कारण लगभग एक वर्ष तक क्रांतिकारी भूमिगत आन्दोलन चलाते रहे। उन्होंने भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की मासिक पत्रिका इंकलाब का संपादन भी किया।

मैडम भीकाजी कामा (24 सितंबर, 1861 - 13 अगस्त, 1936)

बंबई की एक पारसी महिला मैडम भीकाजी कामा ने भारत की आजादी के पक्ष में जनमत बनाने के लिए अपार बाधाओं के बावजूद भारत के बाहर काम करने का फैसला किया। उन्होंने 1902 में भारत छोड़ दिया और लंदन में प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा से जुड़ गईं। उसने यूरोप और अमेरिका की यात्राएँ कीं। उसने आयरलैंड, रूस, मिस्र और जर्मनी में क्रांतिकारियों के साथ अनुबंध स्थापित किया । उन्हें अपनी गतिविधियों का केंद्र लंदन से पेरिस स्थानांतरित करना पड़ा जहां उन्होंने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

"बंदे मातरम" पत्रिका शुरू की। पत्रिका की बड़ी संख्या में प्रतियां भारत में तस्करी कर लाई जातीऔर पूरे देश में वितरित की जाती। वह भारत और लंदन में वी. डी. सावरकर द्वारा शुरू की गई 'अविनव भारत सोसाइटी' की एक बहुत सक्रिय सदस्य रही।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उन्हें फ्रांसीसी सरकार द्वारा कैद कर लिया गया और बाद में उन्होंने फ्रांसीसी कम्युनिस्टों के साथ हाथ मिला लिया। मैडम भीकाजी कामा ने अपने तरीके से देश की आजादी के लिए आखिरी दम तक लड़ाई लड़ी और कई क्रांतिकारियों को धन और सामग्री से मदद की। उन्होंने 1907 में स्टटगार्ट (जर्मनी) में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में पहला राष्ट्रीय ध्वज फहराया। उन्होंने घोषणा की, "यह ध्वज भारतीय स्वतंत्रता का है! देखो, इसे अपने प्राणों की आहुति देने वाले युवा भारतीयों के रक्त से पवित्र किया गया है। सज्जनों, मैं आपसे आह्वान करती हूं कि उठकर भारतीय स्वतंत्रता के इस ध्वज को प्रणाम करें। मैं इस झंडे के नाम पर दुनिया भर के आजादी के दीवानों से इस झंडे का समर्थन करने की अपील करती हूं। । उन्होंने बहुत यात्रा की और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे भारतीयों के बारे में लोगों से बातें कर जागरुकता पैदा की।

सुचेता कृपलानी (25 जून, 1908 - 1 दिसंबर, 1974)

1932 में कृपलानी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सार्वजनिक जीवन में तथा 1939 में राजनीति में प्रवेश किया ।उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होकर राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाई।1940 में उन्होंने फैजाबाद में व्यक्तिगत सत्याग्रह की पेशकश की और उन्हें दो साल की कैद हुई। इंदिरा गाँधी ने कभी सुचेता कृपलानी के बारे में कहा था, 'ऐसा साहस और चरित्र तो स्त्रीत्व को इस कदर ऊँचा उठाता हो महिलाओं में कम ही देखने को मिलता है।' सुचेता कृपलानी का स्वतंत्रता संग्राम में सबसे सक्रिय योगदान भारत भारत छोड़ो आंदोलन में रहा। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वह भूमिगत हो गईं और गुप्त रूप से ब्रिटिश विरोधी प्रतिरोध का आयोजन करने की उल्लेखनीय सेवा प्रदान की।इन्होंने अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की स्थापना भी की जिसका उद्देश्य महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता व चेतना का प्रसार करना था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब बड़े शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, तो इनको जो समूह सक्रिय थे उनके बीच समन्वय व संपर्क करके उनको अहिंसात्मक आंदोलन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित करने का मुख्य कार्य सौंपा गया। सुचेता ने एक प्रांत से दूसरे प्रांत की यात्रा की ताकि नेतृत्वकर्ताओं से संपर्क बना रहे। 1944 में इन्हें गिरफ्तार करके लखनऊ की जेल में कैद रखा गया।

भारत के संविधान के निर्माण के दौरान उन्हें संविधान सभा की प्रारूप समिति के सदस्य के रूप में चुना गया था। वह 1946 में संविधान सभा की सदस्य रहीं। वह 1958 से 1960 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की महासचिव रहीं और स्वतंत्रता के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री (1963-1967) के रूप में भी चुना गया ।

कमला नेहरू (1 अगस्त, 1899 – 28 फ़रवरी, 1936)

कमला नेहरू, जवाहरलाल नेहरू की पत्नी ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए सक्रिय रूप से काम करने की इच्छा में अपने पति को पूरा समर्थन दिया। इलाहाबाद के नेहरू गृह नगर में उन्होंने जुलूसों का आयोजन किया , सभाओं

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

को संबोधित किया और शराब तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरने का नेतृत्व किया। 1921 के असहयोग आंदोलन में उन्होंने इलाहाबाद में महिलाओं के समूहों को संगठित किया और खादी के कपड़ों के उपयोग का प्रचार किया। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी सरकार ने उनकी गतिविधियों के लिए उन्हें दो बार गिरफ्तार भी किया। गाँधी जी ने 1930 के नमक सत्याग्रह के दौरान दांडी यात्रा की, तब कमला नेहरु ने भी इस सत्याग्रह में भाग लिया। इतिहासकारों का कहना है कि कमला नेहरू में गज़ब का आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता थी।जब उनके पति को एक बार राष्ट्रद्रोही भाषण देने के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया गया तो वह उनकी जगह गयीं और कमला जी ने नेहरू जी का भाषण पढ़ा।28 फरवरी, 1936 को स्विटज़रलैंड में कमला नेहरू की बेहद कम उम्र में टीबी से मृत्यु हो गयी। उनके पति श्री जवाहरलाल नेहरू उस समय जेल में थे।

दुर्गाबाई देशमुख (15 जुलाई, 1909 - 9 मई, 1981)

भारत की स्वतंत्रता सेनानी और महान समाज सेविका दुर्गाबाई देशमुख, आंध्रप्रदेश के राजमुंदरी जिले के पास एक गांव काकीनाडा से थी। उनके पिता का नाम बीवीएन रामा राव एक सामाजिक कार्यकर्ता थे, ऐसे में उन पर अपने पिता की निःस्वार्थ सामाजिक सेवा की भावना का गहरा प्रभाव पड़ा।दुर्गाबाई एक ऐसी स्वतंत्रता सेनानी थी जिनके रोम-रोम में देशभक्ति की भावना समाहित थी। यही वजह थी कि वह छोटी उम्र से ही स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेने लगी । वह महात्मा गांधी की अनुयायी थीं और इस प्रकार गांधी के सत्याग्रह आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित होकर उनके पूरे परिवार ने हर तरह की विदेशी वस्तुओं का त्याग कर स्वदेशी को अपना लिया। नमक सत्याग्रह में उन्होंने प्रसिद्ध नेता टी. प्रकाशम के साथ भाग लिया। 25 मई, 1930 को वे गिरफ्तार कर लीं और एक वर्ष की सज़ा हुई। सज़ा काटकर बाहर आते ही फिर आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें पुनः गिरफ्तार करके तीन वर्ष के लिए जेल में डाल दिया। दुर्गाबाई को उस वक्त काफी शारीरिक यातनाओं को भी झेलना पड़ा था हालांकि वह एक स्वाभिमानी स्वभाव की महिला थी। इसलिए उन्होंने जेल से छूटने के लिए क्षमा नहीं मांगी । उन्होंने बहुत कम उम्र में 'आंध्र महिला सभा' और 'हिंदी बालिका पाठशाला' शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।1946 में दुर्गाबाई मद्रास प्रांत से भारत की संविधान सभा की सदस्य चुनी गई। वह संविधान सभा में अध्यक्षों के पैनल में अकेली महिला थीं।

बसंती दास (23 मार्च, 1880 – 7 मई, 1974)

बसंती दास भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता थीं। वह प्रसिद्ध कार्यकर्ता चित्तरंजन दास की पत्नी थीं। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया।1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने विदेशी वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने का और धरना देने का आह्वान किया। कोलकाता में 4 स्वयंसेवकों के छोटे समूह सड़कों पर हाथों से बने खादी कपड़े को बेचने के लिए कार्यरत थे। दास कोलकाता में इस आंदोलन के प्रमुख व्यक्ति थे और उन्होंने अपनी पत्नी बसंती देवी के साथ ऐसा एक समूह बनाने का फैसला किया। 1925 में पति चित्तरंजन दास की मृत्यु के बाद उन्होंने विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया और स्वतंत्रता के बाद सामाजिक कार्य जारी रखा।

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

राज कुमारी अमृत कौर (2 फरवरी 1889 – 2 अक्टूबर 1964)

राजकुमारी अमृत कौर कपूरथला के शाही परिवार से ताल्लुक रखती थीं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के प्रभाव में आने के बाद ही उन्होंने भौतिक जीवन की सभी सुख-सुविधाओं को छोड़ दिया। राजकुमारी अमृत कौर पहली बार 1919 में मार्शल लॉ के आंदोलन के दिनों में महात्मा गांधी के संपर्क में आईं। गाँधीजी के नेतृत्व में सन 1930 में जब 'दांडी मार्च' की शुरूआत हुई तब राजकुमारी अमृतकौर ने उनके साथ यात्रा की और जेल की सजा भी काटी। वे महात्मा गांधी की अनुयायी तथा 16 वर्ष तक उनकी सचिव रहीं।1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अमृत कौर सबसे अधिक सक्रिय थीं। उन्होंने दिन-ब-दिन जुलूसों का नेतृत्व किया। 9 अगस्त से 16 अगस्त तक उनके नेतृत्व वाले जुलूसों पर पंद्रह बार लाठीचार्ज किया गया।उन्हें 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के दौरान जेल भी हुई। अमृत कौर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रतिनिधि के तौर पर सन 1937 में पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत के बन्नू गई। ब्रिटिश सरकार को यह बात नागवार गुजरी और उसने राजद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें जेल में बंद कर दिया।1926 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन को जन्म देने में अमृत कौर का महत्वपूर्ण योगदान था और वह कई वर्षों तक इसकी सचिव रहीं। वह भारत की राजनेता तथा स्वतंत्र भारत की प्रथम स्वास्थ्य मंत्री रही।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय (3 अप्रैल, 1903 – 29 अक्टूबर, 1988)

कमलादेवी भारत के स्वतंत्रता इतिहास से जुड़ा हुए एक प्रसिद्ध चेहरा जो भारत के कर्नाटक राज्य से थी। ये एक जानी मानी स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ एक समाज सुधारक भी थीं । असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए ये लंदन से वापस भारत आई थी, दरअसल ये लंदन में अपने पति के साथ रह रही थी तभी इनको इस आंदोलन के शुरू होने की खबर मिली और खबर मिलते ही ये भारत आ गई । 1922 में सक्रिय राजनीति में शामिल होने का फैसला किया और उसी साल कांग्रेस में शामिल हो गईं। आजादी की लड़ाई में वे हमेशा अडिग रहीं। कमलादेवी की इस कोशिश के बाद ही असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने साल 1920 में 'ऑल इंडिया वीमेंस कॉन्फ्रेंस' की स्थापना की ।1929 में अहमदाबाद में युवा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए, कमला देवी ने शिकायत की कि "हमें शहादत के लिए खुद को तैयार रखने का बहुत शौक है लेकिन जब गर्दन काटने का समय आता है तो हम पीछे हट जाते हैं ।साल 1930 में जब नमक को लेकर हमारे देश में आंदोलन शुरू हुआ था, तो कमलादेवी उस आंदोलन का भी हिस्सा रही। इस आंदोलन को इन्होंने महात्मा गांधी के साथ मिलकर कामयाब बनाया , इतना ही नहीं इन्होंने खुद भी नमक बनाया था। 1939 और 1944 के बीच उन्हें उनके राजनीतिक कार्यों के लिए उन्हें कई बार जेल जाकर यातनाएं झेलनी पड़ी। कमलादेवी को अपने जीवन के पांच साल जेल में गुज़ारने पड़े। इस तरह इन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए उत्कृष्ट कार्य किया।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

रानी गाइडिन्ल्यु (26 जनवरी, 1915 - 17 फरवरी, 1993)

रानी गैडिलियू उन कुछ महिला राजनीतिक नेताओं में से एक थीं, जिन्होंने बाधाओं का सामना करने के बावजूद अपने देश के इतिहास के औपनिवेशिक युग में असाधारण धैर्य दिखाया। उनका जन्म 26 जनवरी, 1915 को मणिपुर के नुंगकाओ शहर में हुआ था । गाइडिन्ल्यु 13 वर्ष की कम उम्र में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन की नायिका बनी। इसने बाल्यकाल में ही शिवाजी के जैसे 'गुरिल्ला युद्ध' से अंग्रेजों की नींद हराम कर रखी थीं, इसलिए अंग्रेजों ने इन्हें 1932 में कैद कर लिया, जब वे 16 वर्ष की ही थीं । जब वे जेल में थीं, तब भी इनके अनुयायियों ने स्वतंत्रता संग्राम जारी रखा। 1947 में भारत के स्वतंत्र होने के साथ ही वे भी स्वतंत्र हो गईं। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के समान ही वीरतापूर्ण कार्य करने के लिए इन्हें 'नागालैण्ड की रानी लक्ष्मीबाई' कहा जाता है।

मातंगिनी हाजरा (19 अक्टूबर, 1870 - 29 सितम्बर, 1942)

भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाली बंगाल की वीरांगनाओं में से थीं। सन 1930 के आंदोलन में जब उनके गाँव के कुछ युवकों ने भाग लिया तो मातंगिनी ने पहली बार स्वतंत्रता आंदोलन की चर्चा सुनी। वह 1932 में स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुईं।नमक सत्याग्रह के दौरान उन्हें जेल हुई। किंतु मातंगिनी की वृद्धावस्था देखकर उन्हें छोड़ दिया गया।1933 में उन्होंने एक काले झंडे के प्रदर्शन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया, जहाँ बंगाल के राज्यपाल पुलिस घेरे में सभा को संबोधित कर रहे थे। इस बार उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और छह महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई।

इसके बाद सन 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान ही एक घटना घटी। 29 सितम्बर, 1942 के दिन एक बड़ा जुलूस तामलुक की कचहरी और पुलिस लाइन पर क़ब्ज़ा करने के लिए आगे बढ़ा। मातंगिनी इसमें सबसे आगे रहना चाहती थीं। किंतु पुरुषों के रहते एक महिला को संकट में डालने के लिए कोई तैयार नहीं था जैसे ही जुलूस आगे बढ़ा अंग्रेज़ सशस्त्र सेना ने बन्दूकें तान लीं और प्रदर्शनकारियों को रुक जाने का आदेश दिया। इससे जुलूस में कुछ खलबली मच गई और लोग बिखरने लगे। ठीक इसी समय जुलूस के बीच से निकलकर मातंगिनी हज़ारा सबसे आगे आ गईं। हाथ में झंडा लिए मातंगिनी फिर भी आगे बढ़ती रही पुलिस ने फिर गोली चलाई जिनमें से एक उनकी बाजू और दूसरी उनके माथे पर लगी। गोलियाँ लगने के बावजूद मतांगिनी मजबूत हाथों से तिंरगे को पकड़ते हुए अपनी तेज आवाज में वंदे मातरम् कहते हुए धरती पर गिर गई और देश की आजादी के लिए अपनी जान न्योछावर कर दिए।मातंगिनी हाजरा ने देश के लिए 73 साल की उम्र में अपनी जान दे दी और शहीद हो गईं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

निष्कर्ष

भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी और प्रयासों के बाद भारत ने 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की। हजारों भारतीय महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। जिस अहिंसक आंदोलन ने भारत को आजादी दिलाई, वह न केवल महिलाओं को साथ लेकर चला बल्कि अपनी सफलता के लिए महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर था। सामान्य मध्यम वर्ग की महिलाओं से राष्ट्र को जो समर्थन मिला उस से इतिहास अनभिज्ञ था। उन्होंने सार्वजनिक बैठकें कीं, विदेशी शराब और वस्त्र बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया, खादी बेची और राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने बहादुरी से पुलिस के डंडों का सामना किया । मातृभूमि की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए देश की सैंकड़ों-हजारों स्त्रियों ने अपना जीवन स्वतन्त्रता के लिए समर्पित कर दिया। अपने आंदोलनों से उन्होंने भारतीय पुरुषों को उनके संकल्प, साहस और क्षमताओं से परिचित कराया।यही कारण था जब 26 जनवरी, 1950 को जब भारतीय संविधान लागू हुआ तो महिलाओं को मताधिकार के साथ सभी प्रकार के चुनाव लड़ने, विवाह, शिक्षा, सम्पति, तलाक, दहेज सम्बंधित सभी विषयों पर ध्यान दिया गया । यह सब भारतीय महिलाओं द्वारा स्वतंत्रता से पूर्व राष्टीय अंदोलनों में दिखाए अदम्य साहस व बलिदान का परिणाम था ।

संदर्भ ग्रंथ

1. Swami,Dr. Nivedita, Amazing Indian Women's Freedom Fighters,World Wide Journal of Multidisciplinary Research and Development,ISSN: 2454-6615, 2018,Volume 4(7) pp 142-144
2. Kaur,Satwinder,Role of Women in India's Struggle for Freedom,International Journal of Management and Social Sciences Research (IJMSSR),ISSN: 2319-4421,April 2013 ,Volume 2, No. 4,pp 112-114.
3. Mondal, Dr. Susanta, Quit India Movement: Rethinking the Role of Women, History Research Journal, ISSN: 0976-5425, Vol-5-Issue-4-July-August-2019, pp 1581-89.
4. Jain,Dr. Reenu,Role of Women in Indian's Struggle for Freedom, International Journal in Management and Social Science,ISSN: 2321-1784,March, 2017,Vol.05 Issue-03,pp 357-360.
5. Kumar,Manoj,महिला सशक्तिकरण और उच्च शिक्षा,Researc revolution,International, Journal of Social Science & Management,ISSN 2319-300X,Volume - VIII, Issue : 4, January 2020,pp 35-42.
6. Aggarwal, R.C, भटनागर डॉ. महेश,(1999) Constitutional Development and National Movement of India, S.Chand Publishing limited, New Delhi, 1999.
7. थापर-बजोर्कर्ट, एस. (2006) वुमन इन द इंडियन नेशनल मूवमेंट: अनसीन फेसेज एंड अनसुनी वॉइसेज, 1930-42। भारत: सेज प्रकाशन, पृष्ठ 55-58।
8. चांद, तारा, (1961) हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खंड IV, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली।
9. त्रिपाठी, आर. एस. तिवारी, आर.पी. (1999), भारतीय महिलाओं पर परिप्रेक्ष्य, एपीएच प्रकाशन निगम, नई दिल्ली, पृष्ठ127-142।
10. ठाकुर, बी. (2006), वीमेन इन गांधीज़ मास मूवमेंट्स, इंडिया, डीप एंड डीप पब्लिकेशंस प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ 91-105।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:5(3), May: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd May 2023
Publication Date:1st June 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.05.52
www.ijmer.in

11. कस्तूरी, लीला, मजूमदार, वीणा, (1994) महिला और भारतीय राष्ट्रवाद, विकास प्रकाशन हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ34-35।
12. भूले बिसरे क्रांतिकारी, तंवर, श्याम सिंह, श्रीमती मृदुलता(2018) प्रभात प्रकाशन, भारत।
13. परसेडिया, बी.एस. (2021)भारत में स्वतंत्रता तथा लोकतंत्रात्मक गणराज्य का उदय, बुक्सक्लिनिक पब्लिशिंग, छत्तीसगढ, पृष्ठ 296-315.
14. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%8F%E0%A4%A8%E0%A5%80_%E0%A4%AC%E0%A5%87%E0%A4%B8%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%9F
15. https://yourstory.com/2016/08/women-contribution-independence#:~:text=The%20Civil%20Disobedience%20Movement%2D%201930,women%20in%20the%20freedom%20struggle.
16. https://indiafoundation.in/articles-and-commentaries/the-role-of-women-in-the-indian-freedom-moment/.
17. https://indianculture.gov.in/node/2800988
18. https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%80_%E0%A4%B9%E0%A4%9C%E0%A4%BC%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BE .